IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जयशंकर प्रसाद का दार्शनिक पक्ष

डॉ प्रियंका कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग
साबरमती विश्वविद्यालय अहमदाबाद,गुजरात

सार

प्रसाद छायावाद युग के श्रेष्ठ एवं प्रतिनिधि कवि हुए हैं उन्होंने महाकाव्य के रूप में 'कामायनी' की रचना की और उनकी अभिव्यक्ति में जीवन दर्शन को इस प्रकार दर्शाया है कि उसमें आधुनिक मानव जीवन को सुखी बनाने के प्रेरणा स्रोत दिए हैं, प्रसाद का दार्शनिक पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव शिव दर्शन के आने वाले प्रत्यभिज्ञा दर्शन का दिखाई दिया है। अनेक पारिभाषिक शब्द इसका प्रमाण हैं। प्रसाद की कुशलता यह है कि उन्होंने दर्शन की नीरसता एवं शुष्क विचारों को भाव एवं योग के माध्यम से सरस एवं सुलभ बनाने का प्रयास किया है। कामायनी का दार्शनिक पक्ष व्यवहारिक है और इस व्यवहारिकता को अपनाकर मनुष्य अपने जीवन को आनंदमय सुखमय बना सकता है।

बीज शब्द – अभिव्यक्ति,जीवन दर्शन, मानव जीवन, आनंद, भाव एवं योग, चेतन।

मूल आलेख

प्रसाद के दार्शनिक पक्ष की वैचारिकता अभिव्यक्ति में उन्होंने नियतिवाद समरसतावाद आनंदवाद संसार की सत्यता अभेदवाद आदि को उजागर किया है। नियति एक ऐसी प्रबल एवं अदृश्य शक्ति है जो कर्म के अनुसार मनुष्य के जीवन का संचालन और उसके कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है यह शक्ति संसार के पाखंडी अत्याचारी मनुष्य को प्राकृतिक शक्तियों के द्वारा दंड देकर उनका संतुलन करती है-"नियति चलाती कर्म चक्र यह"

नियति एक दैव शक्ति है जो संपूर्ण विश्व को शासन एवं नियंत्रित करती है, संसार का उत्थान -पतन नियति के हाथ है और मनुष्य को उसके अहंकार का परिणाम दिखा कर ईश्वर की ओर प्रेरित करती है।'कामायनी' में प्रसाद की दार्शनिकता नियतिवाद से पूर्ण रूप में प्रभावित हुई है।

प्रत्यभिज्ञा दर्शन में सरसता को शिव के रूप में बताया है शिवत्व की प्राप्ति होने पर समस्त द्वन्द् समाप्त हो जाते हैं। और सुख - दुख दोनों की समरसता को उजागर किया है जिसमें श्रद्धा मनु को समरसता का रहस्य समझाते हुए कहती है-

नित्य समरसता का अधिकार,
उमड़ता कारण जलधि समान।
व्यथा से नीले लहरों बीच,
बिखरते सुख मणि गण धुतिमान।।

जयशंकर प्रसाद की विचारधारा है कि मनुष्य को अपने जीवन में आनंद की अनुभूति प्राप्त करने के लिए समस्त क्षेत्रों में समरसता को अपनाना होगा सुख-दुख हृदय और बुद्धि ज्ञान एवं क्रिया की समरसता करने पर ही जीवन में असीम आनंद की प्राप्ति होगी।

जयशंकर प्रसाद जी का मानना है कि जीवन में दुख का भी अपना अलग महत्व है, दुख स्थाई नहीं होता बल्कि क्षणिक होता है जैसे अंधेरी रात के बाद प्रकाश का आगमन होना निश्चित है उसी प्रकार दुख के बाद सुख का आना स्वाभाविक है-

दुख की पिछली रजनी बीच,
विकसता सुख का नवल प्रभात।

जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में समरसतावाद को स्पष्ट रूप से निरूपित किया है।

प्रसाद की विचारधारा में व्यक्ति को जीवन में आनंद प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम कर्मशील होना चाहिए क्योंकि व्यक्ति अपने कर्मों का ही फल प्राप्त करता है-

कर्म का भोग भोग का कर्म,
यही जड़ का चेतन आनंद।

जय शंकर प्रसाद का मानना है आनंदवाद के लिए शुद्ध सात्विक प्रेम की आवश्यकता होती है, वासनात्मक नहीं । बुद्धि का संतुलन है आनंद का मूल आधार है भौतिक सुखों की अधिक प्राप्ति मनुष्य को अकर्मण्य बना देती है जो विनाश का कारण बनती है।

जयशंकर प्रसाद की दार्शनिक विचारधारा आनंदवाद के रूप में कामायनी में दृष्टव्य हुई है उन्होंने कामायनी में उस आनंद भूमि का वर्णन किया है जहां सुख और दुख दोनों समरसता आनंद की अनुभूति कराती है-

समरस के जड़ या चेतन
सुंदर साकार बना था।
चेतना एक विलसती,
आनंद अखंड घना था।

प्रसाद जी ने कामायनी में संसार को चिति रूप में स्वीकार किया है चिति सत्य है,अतः उससे उत्पन्न यह जगत भी सत्य एवं सुंदर है-

चित का स्वरूप यह नित्य जगत,
यह रूप बदलता है शत-शत।

प्रसाद के मतानुसार महाचिति अपनी इच्छा अनुसार अपने ही अंतर्गत संसार का उन्मेष करती है। महाचिति बिना उपादान के बिना उपकरण के केवल संकल्प मात्र से संसार उन्मीलन करती है। उसकी लीलाएं है पांच प्रकार की हैं, सृष्टि स्थिति संहार विलय और अनुग्रह। 'कामायनी' के श्रद्धा सर्ग में प्रसाद की यह (इस) संपूर्ण दार्शनिकता का उल्लेख किया गया है। जहां श्रद्धा मनु को समझाती हुई कहती है-

कर रही लीलामय आनंद,
महाचिति सजग होई सी व्यक्त।
विश्व का उन्मीलन अभीराम,

वेदांत दर्शन में जहां संसार के मिथ्यात्व का प्रतिपादन हुआ है वही प्रसाद जी ने शिव दर्शन की मान्यताओं को अपनाते हुए संसार की सत्यता को स्वीकारा है। जब संसार सत्य का रूप है तो इसमें पलायनता का प्रश्न ही नहीं उठता बल्कि इसमें प्रवृत्त होना चाहिए, यही प्रसाद का दार्शनिक संदेश है-

काम मंगल से मंडित श्रेय
सर्ग इच्छा का है परिणाम।
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल
बनाते हो असफल भवधाम।।

प्रसाद जी का मत है कि संसार के प्रत्येक पदार्थ में शिव विद्यमान हैं। संसार में भिन्न-भिन्न रूपात्मक पदार्थ दृष्टिगोचर होते हैं, वे सभी शिव का ही रूप है। शिव से अलग कोई नहीं है चिति रूप एक आत्मा है देशकाल आदि के भेद से नाना रूपों में दिखाई पड़ती है। प्रत्यभिज्ञा दर्शन की इसी अभेदवादी विचारधारा को प्रसाद ने कामायनी में दर्शाया है-

एक तत्व की प्रधानता
कहो उसे जड़ या चेतन।

निष्कर्ष

प्रसाद की विचारधारा है कि संसार सत्यम एवं सुंदर है इसमें प्रत्येक मनुष्य को प्रवृत्त होना चाहिए। जीवन की परेशानियों से मुंह मोड़ कर पलायनवादिता ग्रहण करना कायरता है। साहस और धैर्य के साथ समस्याओं से जूझते हुए जीवन और जगत में प्रवृत्त होने से सफलता प्राप्त होती है। कामायनी का जीवन दर्शन व्यवहारिक एवं सर्वजन सुलभ है। आधुनिक भौतिकवादी युग में प्रसाद की दार्शनिक विचारधारा पूर्ण रूप से प्रासंगिक है। कामायनी में प्रसाद का जीवन दर्शन इतना व्यवहारिक है कि उसे ग्रहण कर मनुष्य अपने लक्ष्य की प्राप्ति अवश्य ही कर सकता है। कामायनी का पहला सर्ग चिंता अंतिम सर्ग आनंद, चिंता से आनंद तक का सफर मनु अर्थात मान्य किया है। चिंता ग्रस्त मन किस प्रकार आनंद की अनुभूति कर सकता है। यही कामायनी का संदेश है। अब कहां जा सकता है कि प्रसाद की कामायनी में जीवन दर्शन पूर्णत: निरूपित हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1-कामायनी -जय शंकर प्रसाद,

2-कविता के नये प्रतिमान -डॉ नामवर सिंह

3-कामायनी एक पुनर्विचार -मुक्तिबोध